eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 07, July 2025

श्रीमद् भगवद् गीता में प्रबंधन का महत्व

डा० शुचि[1]
[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, सस्कृत विभाग, लाला महादेव प्रसाद वर्मा बालिका महाविद्यालय, गोसाईगंज, लखनऊ

Received: 20 July 2025 Accepted & Reviewed: 25 July 2025, Published: 31 July 2025

Abstract

श्रीमद् भगवद् गीता कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास द्वारा रचित एक महान ग्रंथ है, जो भारत की महान धार्मिक संस्कृति तथा मूल्य को समझने का ऐतिहासिक एवम् साहित्यिक साक्ष्य है। तथा लोक परलोक का आध्यात्मिक ग्रंथ है। श्री वेदव्यास जी ने गीता की महता को प्रतिपादित करते हुए कहा है– "गीता सुगीता करने योग्य है", 'गीता सुगीता कर्त्तव्या' क्योंकि यह स्वयं पद्मनाभ भगवान श्री कृष्ण के मुखारविन्द से निकली है। गीता के ज्ञान ने युद्ध क्षेत्र मे निराशा तथा किंकर्तव्यविमूढ़ हुए अर्जुन को धर्म युद्ध करने के लिए मानसिक दृढ़ता प्रदान की परन्तु उनका यह ज्ञान केवल अर्जुन के लिए नही था अपितु आधुनिक प्रबंधन के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है। गीता का प्रत्येक अध्याय तथा प्रत्येक श्लोक अत्यंत सटीक तथा महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्दः श्रीमद् भगवद् गीता, श्री कृष्ण, अर्जुन, प्रबंधन, बुद्धि, निष्काम कर्म, आत्मज्ञान।

Introduction

श्रीमद् भगवद् गीता में ज्ञान, भक्ति तथा कर्म का समन्वय है श्री कृष्ण साक्षात् परम् ब्रह्म है विश्व उन्हीं में निहित है, वे नित्यों के नित्य तथा जगते के सूत्रधार है उनके उपदेशों में भारतीय धर्म तथा चिंतन का निचोड़ विद्यमान है उनमें मानव जाति के कल्याण के लिए गीता केवल उपदेशी ग्रथ ही नहीं अपितु तो मानव इतिहास की सबसे महान धार्मिक सामाजिक दार्शनिक तथा राजनीतिक वार्ता भी है श्रीमद् भागवत गीता एक धर्म ग्रंथ न होकर जीवन शैली है जो प्रत्येक वर्ग को अलग–अलग संदेश देती है भगवत गीता के 18 अध्याय तथा 700 श्लोकों में मानव जाति की आध्यात्मिक, मानसिक तथा बौद्धिक भारतीय समस्याओं का समाधान किया गया है गीता के द्वारा महात्मा गांधी आदि भारतीय चिंतकों ने प्रेरणा प्राप्त की है।[1]

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने लिखा है कि "घने अंधकार में जब मैं अकेला असहाय हो जाता हूँ तब मैं भागवत गीता की शरण में जाता हूँ।"

डॉ० राधाकृष्णन का कथन है कि "गीता का अर्थ हमारे उपनिषदों शास्त्रों तथा महाकाव्य में जो ज्ञान दिया गया है उन सब का सारगर्भित सार ही भगवत गीता है।"

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 07, July 2025

श्री एल्डर हप्सी के अनुसार भगवद् गीता कभी समाप्त न होने वाला दर्शन का सबसे पूर्ण विवरण है।

गीता में आधुनिक प्रबंधन के अनेक सिद्धांत प्रसिद्ध है कौरव सेना पर एक निष्ठ भाव से लक्ष्य के प्रति प्रेरित करने वाले गीता के उपदेश वर्तमान समय के लिए अत्यंत उपयोगी है, क्योंकि विश्व के वही देश आज उन्नति के पथ पर अग्रसर है जो अपने व्यावसायिक उपक्रमों का अत्यंत कुशलता से प्रबंधन करते हैं।

गीता का सिद्धांत यही है की सफलता जनित सुख तथा असफलता जनित दुख में समत्व भाव से युक्त होने पर ही सफलता की प्राप्ति हो सकती है, युवा वर्ग को कभी भी जीवन के उतार–चढ़ाव से विचलित नहीं होना चाहिए फिर बुद्धि के द्वारा ही लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

श्रीमद् भागवत गीता में प्रबंधन के निम्नलिखित सूत्र हैं.–

1. भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को अपने सामर्थ के प्रति आत्म विश्वास जगाने की प्रेरणा देते हुए आलसी तथा कायरता का परित्याग करने की शिक्षा देते हैं क्योंकि तुच्छ दुर्बलता का परित्याग किए बिना सफलता के मार्ग पर चलना असंभव है।[2]

कलैवयं मा स्म गमः, पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते।

क्षुद्र हृदयदौर्वल्यं व्यक्त्वोत्ष्ठि परन्तप।।

2. गीता का प्रबंध सूत्र यह है कि मनुष्य को प्रतिकूल परिस्थितियों में कभी भी विचलित नहीं होना चाहिए क्योंकि विवेकी पुरुष हर्ष तथा शोक से परे होकर प्रत्येक परिस्थिति में उदासीन रहकर आगे बढ़ने का प्रयास करते है।[3]

गतासूनगतासूशच नानुशोचंति पंडिताः

3. गीता प्रबंधक को परिणाम की चिंता किए बिना निरंतर पूर्ण समर्पण के साथ काम करने का उपदेश देती है।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन

4. गीता के अनुसार मनुष्य की पहचान कार्यों तथा दूसरे साथ उसका कैसा व्यवहार है उससे परिलक्षित होती है जब मनुष्य धर्म से विचलित हो जाता है तब अधर्म को आश्रय देता है परंतु यह बात स्पष्ट है कि व्यक्ति को अपने लक्ष्य में आ रही बाधाओ से भयभीत होने की अपेक्षा उन चुनौतियों का सामना करना चाहिए।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 07, July 2025

5. गीता का यही सूत्र है कि हम अपने कार्य को प्रभावित कैसे बनाएं क्योंकि कोई प्रबंधक तब तक अपनी उत्सुकता तथा प्रभावशीलता को शिखर पर नहीं ले जा सकता जब तक उसमें नेतृत्व शक्ति तथा प्रेरणा और कार्य की प्रतिबद्ध योजना, ज्ञान को बढ़ाने के तरीके आदि प्रबंधकीय कौशल से युक्त ना हो।

6 गीता दूसरों की सेवा के महत्व पर बल देती है तथा गीता को प्रबंधन में भी देखा जा सकता है अच्छा प्रबंधन कर्मचारियों को अपना समय स्वेच्छा से देने तथा योग्य कर्म के लिए प्रेरित कर सकता है।

गीता साधन के रूप में चिंतन और आत्म चिंतन को महत्व देती है इस सिद्धांत को प्रबंधन में लागू किया जा सकता है जिसमें पिछले निर्णय और उनके परिणामों पर विचार करने के लिए समय निकालना चाहिए संभावित परिणामों पर भी विचार करना चाहिए।

श्रीमद् भगवद् गीता को प्रबंध की दक्षता और प्रभावशीलता विकसित करने में एक मार्गदर्शक के रूप में देखा जाता है। क्योंकि 'कार्यों में कुशलता ही योग है यही गीता का संदेश है' **'योगः कर्मसु कौशलम्'**।

श्रीमद् भगवद् गीता में भगवान श्री कृष्ण एक गुरु, नायक तथ शिक्षक के रूप में हमारे सामने उपस्थित होते हैं कुरुक्षेत्र में अर्जुन जब अपना कर्तव्य भूल जाते हैं तो भगवान श्री कृष्ण ही उन्हें कायरता की भावना से ऊपर उठाने का प्रयास करते हुये मन तथा इंद्रियों को नियंत्रित करने की शिक्षा देते हैं यह सिद्धांत प्रबंधकों को तनाव चिंता और नकारात्मक भावनाओं को नियंत्रित करने में सहयोग प्रदान करता है।

इसी प्रकार यदि आप एक अच्छे प्रबंधक बनना चाहते हैं तो आपको अपने लक्ष्य और अपनी प्रतिबद्धता के बारे में अपने साथियों से परामर्श अवश्य करना चाहिए।

गीता मनुष्य को धार्मिक मार्ग पर चलने के महत्व पर बल देती है वर्तमान समय में नैतिकता की अपेक्षा शिक्षा व्यवसायिकता की ओर बढ़ती जा रही है जबकि प्रबंधकों के लिए नैतिक नेतृत्व का होना सर्वोपरि है आधुनिक प्रबंधन से आत्म जागरूकता नैतिक आचरण शिक्षा के संयम से स्वयं को सर्वश्रेष्ठ बना सकते हैं।

गीता अपने कार्य के प्रति एक लक्ष्य सिद्ध करने के लिए प्रेरित करती है वह हमें यह सिखाती है कि मनुष्य को अपनी कमजोरी को पहचानना चाहिए और उसी के अनुरूप कार्य करना चाहिए। दैनिक जीवन से कुशल प्रबन्धन से युक्त होना अत्यन्त आवश्यक हे क्योंकि लक्ष्य निर्धारण के लिए परिश्रम, समय, साम्मग्री तथा अनुशीलनशीलता का होना अत्यन्त आवश्यक है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 07, July 2025

वर्तमान समय में युवा वर्ग अत्यधिक तनाव युक्त हो गया है ,इसलिए यदि वह गीता में वर्णित शिक्षाओं को अपने जीवन में अमल करने का प्रयास करे तो वे आध्यात्मिक रूप से समृद्ध होने के साथ साथ गुणवत्ता पूर्ण जीवन जीने में भी सफल हो सकेंगे, क्योंकि गीता की शिक्षाएं मनुष्य को निष्काम कर्म करने तथा भौतिकता आदि से दूर रहने की प्रेरणा देती है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची–

- श्रीमद् भगवद् गीता, गीताप्रेस, गोरखपुर।
- डॉ० धर्मेन्द्र कुमार, "श्रीमद् भगवत गीता", दिल्ली संस्कृत अकादमी।
- A. C. Bhaktivedanta swami prabhupada, "श्रीमद् भगवत गीता यथा रूप" भक्ति वेदांत बुक ट्रस्ट।